आधिपत्य को स्वीकार कर लिया। इल्तुतमिश ने अपनी मृत्यु के अवसर पर सियालकोट और हजनेर तक अपना आधिपत्य कर लिया था। परन्तु उसने उससे आगे बढ़ने का प्रयत्न नहीं किया क्योंकि उससे मंगोलों के प्रत्यक्ष झगड़ा होने की सम्भावना थी।

5. बंगाल-विजय—कुतुबुद्दीन ऐबक के समर्थन और सहायता से अलीमर्दान खाँ ने बंगाल में अपनी सत्ता स्थापित की। इस कारण उसने कुतुबुद्दीन की अधीनता को स्वीकार किया था। परन्तु उसकी मृत्यु के पश्चात् उसने अपने को स्वतन्त्र शासक बना लिया। वह इतना अधिक अत्याचारी सिद्ध हुआ कि प्रायः दो वर्ष पश्चात् ही उसके सरदारों ने उसे कत्ल कर दिया और उसके स्थान पर 1211 ई. में हुसामुद्दीन एवाज खलजी को गद्दी पर बैठाया। एवाज ने सुल्तान गियासुद्दीन की उपाधि ग्रहण की और एक स्वतन्त्र शासक बन गया। जब इल्तुतमिश अपनी पश्चिमी सीमा की सुरक्षा में व्यस्त था तब गियासुद्दीन ने बिहार को अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया और जाजनगर, तिरहुत, बंग तथा कामरूप के पड़ौसी राज्यों से कर वसूल किया। जब इल्तुतमिश ने अपनी पश्चिमी सीमा की सुरक्षा कर ली तब उसने पूर्व की ओर ध्यान दिया। दक्षिणी बिहार को जीतकर वह आगे बढ़ा। गियासुद्दीन उसका मुकाबला करने के लिए आया परन्तु बाद में उसने बिना किसी युद्ध के इल्तुतमिश की अधीनता स्वीकार कर ली और उसे युद्ध की क्षति-पूर्ति के रूप में बहुत-सा धन दिया। इल्तुतमिश मलिक जानी को बिहार का सूबेदार नियुक्त करके वापस आ गया। परन्तु कुछ समय पश्चात् गियासुद्दीन ने मलिक जानी को बिहार से बाहर निकाल दिया और दिल्ली राज्य के आधिपत्य को मानने से इन्कार कर दिया। इल्तुतमिश ने अपने पुत्र तथा अवध के सूबेदार नासिरुद्दीन महमूद को अनुकूल समय की प्रतीक्षा करने के आदेश दिये। जब गियासुद्दीन अपनी पूर्वी सीमा पर युद्ध करने के लिए गया हुआ था तब नासिरुद्दीन ने उसकी राजधानी लखनौती पर आक्रमण किया। गियासुद्दीन अपनी राजधानी की सुरक्षा के लिए वापस लौटा परन्तु युद्ध में मारा गया और 1226 ई. में नासिरुद्दीन ने लखनौती को विजय कर लिया। इस प्रकार 1226 ई. में बंगाल दिल्ली सल्तनत का एक इक्ता (सूबा) बन गया। परन्तु दो वर्ष पश्चात् 1229 ई. में शाहजादा नासिरुद्दीन की मृत्यु हो गयी और मलिक इख्तियारुद्दीन बल्का खलजी ने विद्रोह करके गद्दी पर अपना अधिकार कर लिया। 1229 ई. में इल्तुतमिश ने स्वयं जाकर उस विद्रोह को समाप्त किया, इख्तियारुद्दीन बल्का युद्ध में मारा गया और **बंगाल पुनः दिल्ली सुल्तान के अधीन हो गया।** इस बार इल्तुतमिश ने बंगाल और बिहार में पृथक्-पृथक् इक्तादारों (सूबेदारों) की नियुक्ति की। इसके पश्चात् ये इक्ता (सूबे) इल्तुतमिश की मृत्यु तक उसके अधीन रहे।

6. हिन्दू राजाओं से संघर्ष (राजस्थान, मालवा, दोआब आदि)—कुतुबुद्दीन ऐबक को हिन्दू शासकों की ओर ध्यान देने का अवसर नहीं मिला था। उसके समय में हिन्दुओं ने कुछ स्थान तुर्कों से छीन लिये थे और उसकी मृत्यु से भी उन्होंने लाभ प्राप्त किया था। हिन्दू राजाओं ने आक्रमणकारी नीति को अपना लिया था और वे विभिन्न स्थानों पर तुर्की राज्य को समाप्त करने का प्रयत्न कर रहे थे। चन्देलों ने कालिंजर और अजयगढ़ को जीत लिया था, प्रतिहारों ने ग्वालियर, नरवर और झाँसी पर अधिकार कर लिया था, गोविन्दराय के नेतृत्व में चौहानों ने रणथम्भौर को तुर्कों से छीन कर जोधपुर और उसके निकट के प्रदेशों पर अपना अधिकार कर लिया था, जालोर के चौहानों ने दक्षिणी-पश्चिमी राजपूताना के अधिकांश प्रदेश को जीत लिया था और कई बार तुर्कों को परास्त किया था, भट्टी-राजपूतों ने अलवर और

Scanned with CamScanner

उसके निकटस्थ प्रदेशों को स्वतन्त्र कर लिया था तथा अजमेर, बयाना और थंगीर भी स्वतन्त्र हो गये थे। राजस्थान की भाँति दोआब (आधुनिक उत्तर प्रदेश) में भी हिन्दू शासक तुर्कों के विरुद्ध विद्रोह कर रहे थे। बदायूँ, कन्नौज, बनारस और कटेहर तुर्की आधिपत्य से मुक्त हो गये थे और फर्रुखाबाद तथा बरेली जैसे स्थानों पर हिन्दुओं ने अपने सुरक्षित दुर्ग बना लिये थे।

हिन्दू शासकों की शक्ति को दुर्बल करना और अपने राज्य के मुख्य भाग दोआब को अपने अधीन करना इल्तुतमिश के लिए आवश्यक था। उसने हिन्दू राजाओं के प्रति दृढ़ और आक्रमणकारी नीति का पालन किया। मुख्यतया उसने तुर्की राज्य से छीने गये स्थानों को पुनः जीतने और अपने अधीन प्रदेशों में अपनी सत्ता को दृढ़ करने का प्रयत्न किया। उसने 1226 ई. में रणथम्भौर को जीत लिया। उसके पश्चात् उसने परमारों की राजधानी मन्दोर पर अपना अधिकार किया। 1228-1229 ई. में जालोर के शासक उदयसिंह को आधिपत्य स्वीकार करने एवं वार्षिक कर देने के लिए बाध्य किया गया। उसके पश्चात् बयाना, थंगीर, अजमेर, नागौर और उनके आसपास के प्रदेश जीते गये। 1231 ई. में ग्वालियर का घेरा डाला गया और एक वर्ष के कठिन संघर्ष के बाद उसे विजय कर लिया गया। इल्तुतमिश ने ग्वालियर के सूबेदार मलिक तुसरानुद्दीन तयसाई को कालिंजर पर आक्रमण करने के लिए भेजा। चन्देल शासक भाग गया और मलिक तयसाई ने 1233-1234 ई. में कालिंजर और उसके आसपास के प्रदेशों को लूटने में सफलता पायी। परन्तु इल्तुतमिश के नागदा के गुहिलौतों और गुजरात के चालुक्यों पर किये गये आक्रमण विफल हुए। 1234-1235 ई. में इल्तुतमिश ने मालवा पर आक्रमण किया तथा भिलसा और उज्जैन लूटने में सफलता पायी। तुर्कों ने भिलसा के एक प्राचीनतम हिन्दू मन्दिर तथा उज्जैन के मन्दिरों को लूटा और नष्ट कर दिया। परन्तु यह मालवा की विजय न थी बल्कि केवल एक लूट मात्र थी। दोआब में इल्तुतमिश ने बदायूँ, कन्नौज, बनारस, कटेहर और बहराइच को पुनः जीतने में सफलता प्राप्त की तथा अवध में भी तुर्की सत्ता को स्थापित किया। इस प्रकार **इल्तुतमिश ने तुर्की सत्ता से स्वतन्त्र हो गये प्रदेशों को पुनः जीतने में सफलता प्राप्त की, हिन्दू राजाओं की आक्रमणकारी शक्ति को दुर्बल कर दिया और विजित प्रदेशों में सफलतापूर्वक अपना आधिपत्य स्थापित किया।**

परन्तु इस कार्य की पूर्ति के लिए **इल्तुतमिश को कठोर संघर्ष करना पड़ा था**, यह अवध में हुए पिर्थू के विद्रोह से स्पष्ट हो जाता है जिसके बारे में इल्तुतमिश के पुत्र और अवध के सूबेदार नासिरुद्दीन ने कहा था कि "उसने प्रायः 1,20,000 मुसलमानों का रक्त बहाया था।" उसी प्रकार **राजस्थान में भी इल्तुतमिश की सफलता पूर्ण न थी।** राजपूतों की शक्ति नष्ट कर दी गयी हो, ऐसी कोई बात न थी। नागदा के गुहिलौतों और गुजरात के चालुक्यों ने उसको परास्त किया था, बूँदी के राजपूतों ने उसके एक अधिकारी के आक्रमण को विफल कर दिया था, बयाना और थानागढ़ की विजयों ने चौहानों की शक्ति के विकास को रोकने में असफलता पायी थी, मालवा में परमार-राजपूतों का शासन पहले की भाँति रहा और ग्वालियर की विजय ने चन्देल-राजपूतों के उत्साह में कोई कमी नहीं की जिनके आधिपत्य में झाँसी के निकट तक का प्रदेश रहा।

7. **खलीफा द्वारा इल्तुतमिश के सुल्तान पद की स्वीकृति**—इल्तुतमिश ने बगदाद के खलीफा से सुल्तान के पद की स्वीकृति की प्रार्थना की थी। 18 फरवरी, 1229 ई. में खलीफा

Scanned with CamScanner

के प्रतिनिधि इस स्वीकृति-पत्र को लेकर दिल्ली पहुँचे। खलीफा द्वारा इल्तुतमिश को सुल्तान स्वीकार किये जाने के कारण उसका पद कानूनी बन गया और दिल्ली सल्तनत वैध रूप से एक स्वतन्त्र राज्य बन गया जिसके लिए कुतुबुद्दीन ऐबक ने प्रयत्न आरम्भ किये थे। इस स्वीकृति से इल्तुतमिश को सुल्तान के पद को वंशानुगत बनाने और दिल्ली के सिंहासन पर अपने बच्चों के अधिकार को सुरक्षित करने में सहायता मिली।

8. शासन-प्रबन्ध—इल्तुतमिश ने शासन में कुछ नवीन बातें आरम्भ कीं। उसने **इक्ता**-व्यवस्था को आरम्भ किया, केन्द्र पर एक बड़ी सेना रखी। उसने इक्ता संस्था का प्रयोग भारतीय समाज की सामन्तवादी व्यवस्था को समाप्त करने तथा साम्राज्य के दूरस्थ भागों को

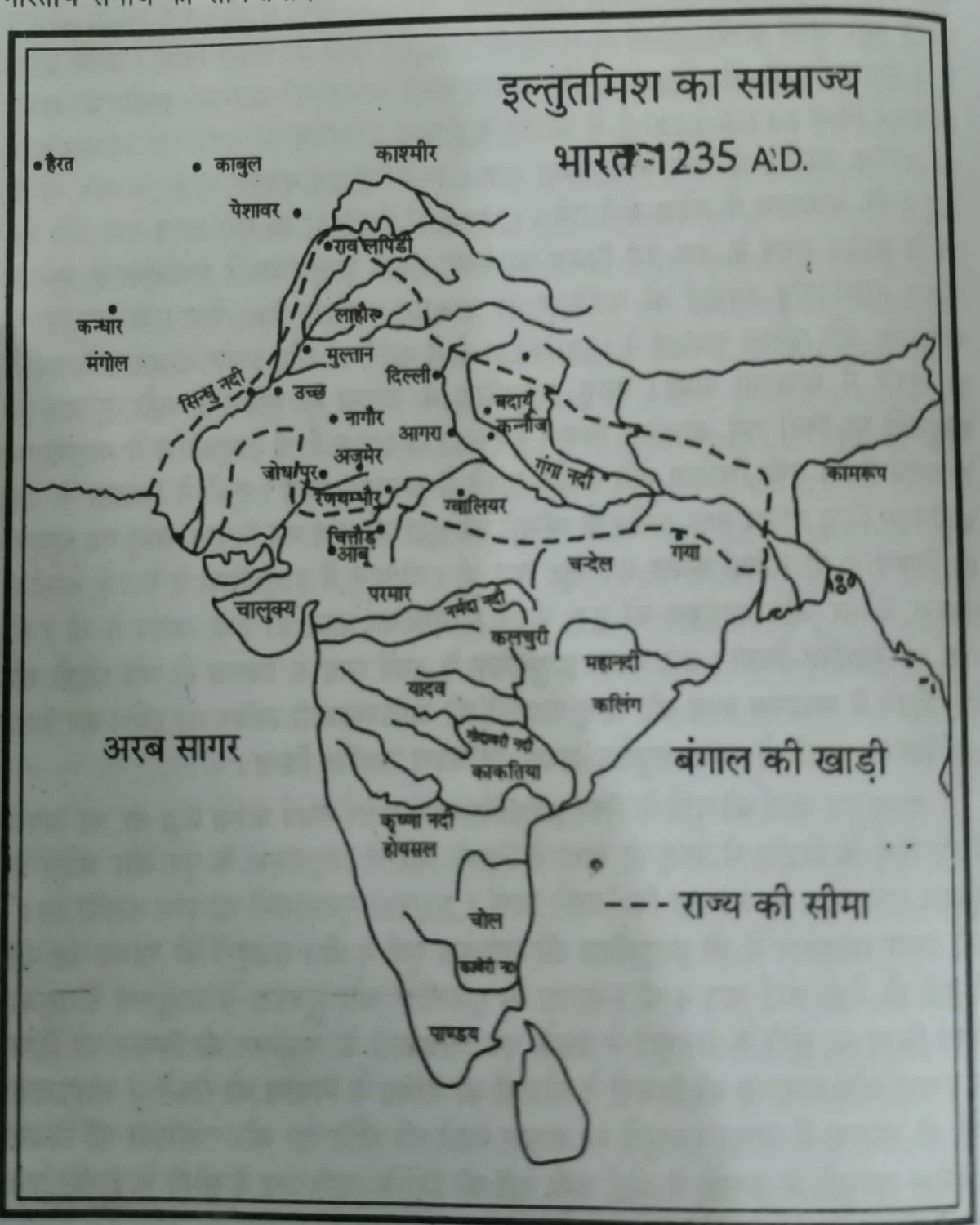

केन्द्र के साथ संयुक्त करने के एक साधन के रूप में प्रयुक्त किया। उसने मुद्रा में सुधार किया। वह पहला तुर्क शासक था जिसने शुद्ध अरबी सिक्के चलाये। सल्तनत युग के दो

Scanned with CamScanner

महत्वपूर्ण सिक्के—चाँदी का टंका (175 ग्रेन) और ताँबे का जीतल उसी ने आरम्भ किये तथा सिक्कों पर टकसाल का नाम लिखवाने की परम्परा शुरू की। उसने उत्तराधिकार के रूप में ज्येष्ठ पुत्र का चयन करने की सामान्य प्रथा को तोड़ दिया। उसने लाहौर के स्थान पर दिल्ली को राजधानी बनाया।

इल्तुतमिश की मृत्यु

1236 ई. में इल्तुतमिश ने बामियान के शासक और जलालुद्दीन मांगबर्नी के अधिकारी सैफुद्दीन हसन कार्लूग (सर वूल्जले हेग के अनुसार खोक्खरों) पर आक्रमण किया। सैफुद्दीन ने गजनी और सिन्धु नदी के बीच के एक बड़े प्रदेश पर अपना अधिकार कर लिया था और मंगोल भी उसे वहाँ से नहीं निकाल सके थे। परन्तु मार्ग में इल्तुतमिश बीमार हो गया जिसके कारण उसे दिल्ली वापस आना पड़ा। हकीम लोग उसके रोग को अच्छा नहीं कर सके और अप्रैल 1236 ई. में इल्तुतमिश की मृत्यु हो गयी।

इल्तुतमिश का मूल्यांकन

इल्तुतमिश एक सुसंभ्य धार्मिक व्यक्ति, साहसी सैनिक, अनुभवी सेनापति और योग्य शासक था। वह दूरदर्शी और कूटनीतिज्ञ भी था। गुलाम का गुलाम होते हुए भी जिस तीव्र गति से उसने उन्नति की और अन्त में सुल्तान के पद को प्राप्त किया, यह उसकी योग्यता का प्रमाण था। निस्सन्देह, अन्य अनेक मुइजी (सुल्तान मोहम्मद गोरी के) और कुत्बी (कुतुबुद्दीन ऐबक के) सरदार भी योग्य थे जिनके बारे में स्वयं इल्तुतमिश ने यह कहा था कि जब वे उसके दरबार में खड़े होते थे तो उसकी इच्छा उनके हाथों और पैरों को चूमने की होती थी। परन्तु वह उन सभी को पीछे छोड़ गया और उन सभी ने उसे अपना सुल्तान स्वीकार किया। यह इल्तुतमिश की श्रेष्ठता का प्रमाण था।

इल्तुतमिश सुसभ्य था और उसने अपने दरबार में ईरानी राज-दरबार के रीति-रिवाजों और व्यवहार को आरम्भ किया। **वह विद्वानों और योग्य व्यक्तियों का सम्मान करता था।** मंगोल-आक्रमणों के कारण मध्य-एशिया और इस्लामी प्रदेशों से भागकर भारत आये हुए सभी योग्य व्यक्तियों और राज-पुरुषों को उसने अपने दरबार में स्थान दिया। उसने समकालीन विद्वान मिनहाज-उस-सिराज और मलिक ताजुद्दीन को संरक्षण प्रदान किया था। निजामुल-मुल्क मुहम्मद जुनैदी, जो एक लम्बे समय तक उसका प्रधानमन्त्री रहा, मलिक कुतुबुद्दीन हसन गोरी और फखरुल-मुल्क इसामी जैसे योग्य व्यक्ति उसके दरबार में सम्मान प्राप्त किये हुए थे। इसके अतिरिक्त उसने स्वयं अनेक गुलामों को प्रशिक्षित किया था जो उसकी शक्ति का आधार बने। विभिन्न योग्य व्यक्तियों के कारण 'उसका राज-दरबार सुल्तान महमूद गजनवी की भाँति ही गौरवपूर्ण बन गया था।' **इल्तुतमिश ने लाहौर के स्थान पर दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया और उसे दिल्ली सल्तनत के सम्मान के अनुकूल सुन्दर और वैभवपूर्ण बनाया।** उसने दिल्ली में विभिन्न तालाब, मदरसे, मस्जिदें और इमारतें बनवायीं। उसने कुतुबमीनार को पूरा कराया जो प्रारम्भिक इस्लाम कला का एक श्रेष्ठ नमूना माना गया है।

Scanned with CamScanner